कसावा में नर्सरी तकनीक

डॉ. एस. सुनिता, डॉ. जे. सुरेश कुमार एवं डॉ. पद्माक्षी ठाकुर

कसावा एक खाद्य–चारा–ईधन एवं भविष्य की फसल है, जिसकी खेती केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं भारत के उत्तर–पूर्वी भागों में की जाती है। इस फसल का प्रवर्धन वानस्पतिक विधि से लता कर्तन/सेट्स/ स्टेक्स के द्वारा किया जाता है अतः अच्छी फसल एवं उपज के लिये बहुगुणन कार्य हेतु सेट्स तैयार करना महत्वपूर्ण कार्य है। ऐसी फसल जिन्हे वानस्पतिक विधि से प्रवर्धन किया जाता है जैसे की आलूकान्दा, इन फसलों में कीट – रोग व्याधि का प्रकोप आसानी से फैलता है साथ ही आयु का कम होना, भारी प्रकृति; संरक्षण आयु में कमी, बहुगुणन अनुपात का कम होना इत्यादि समस्या भी होती है। कसावा लगाने वाले किसान के लिये मानसून का देरी से आना एक समस्या होती है। अतः इसके निराकरण हेतु स्टेक्स को मानसून आने के 1–3 सप्ताह पूर्व लगाना चाहिये। इस तकनीक से एकसमान, रोंग रहित एवं स्वस्थ रोपण सामग्री प्राप्त होती है। कसावा की उचित नर्सरी का प्रारूप पत्रक में वर्णित किया जा रहा है।

टेपिओका के रोपण हेतु हमेशा परिपक्व, रोग रहित एवं स्वस्थ तना जिसकी मोटाई 2–3 से.मी़ व्यास की हो, का उपयोग किया जाता है। तने की ऊपरी भाग की 30 से.मी. तक के कोमल भाग एवं निचली 10 से.मी. काष्ठीय भाग को अलग कर दिया जाता है। उसके बाद बचे हुये तने (सेट्स/स्टेक्स) को 15–20 से.मी. लम्बाई में विभाजित किया जाता है जिसमें 8–12 कलिका उपस्थित हो है। इस सेट्स को फफूंदीनाशक (कार्बेंडाजिम) के 0.1–0.2 % के घोल में एवं 0.02 % कीटनाशक (क्लोरोपायरीफास) के घोल में 5–10 मिनट तक डूबा कर रखा जाता है और लगाने से पहले तक छायादार स्थान में सुखाने हेतु रख दिया जाता है। नर्सरी बेड को 1 मीटर चौड़ाई, 15 से. मी. ऊँचाई एवं सुविधाजनक लम्बाई के अनुसार बनाया जाता है। 1 हेक्टेयर में टेपिओका के रोपण हेतु अंकुरित स्टेक्स की आपूर्ति 40 वर्ग मी. क्षेत्र के नर्सरी से हो जाती है। यदि एक सप्ताह के भीतर ही रोपण करना हो तो 700–800 सेट्स के सघन रोपाई करने का भी चलन है। नारियल की पत्तियां का पलवार के रूप में उपयोग करने से टेपिओका सेट्स में नमी की हानि कम होती है। सेटस में अंकुरण हेतु पर्याप्त सिंचाई करनी चाहिये। एक सप्ताह के भीतर सेटस अंकुरित हो जाते है। अंकुरित स्टेक्स को 2–3 पत्ती अवस्था में मुख्य फसल में रोपण किया जाता है, रोपण हेतु सर्वप्रथम नर्सरी बेड को गीला किया जाता है तद्उपरांत पौधे को जड़सहित निकाला जाता है। इसके अलावा मानसून के आने तक पौधों को नर्सरी में 2–3 सप्ताह तक भी रखा जा सकता है।

प्रारूप

स्टेक्स की तैयारी हेतु तेज या धारदार चाकू का उपयोग । परिपक्व, रोग रहित, स्वस्थ तने से काट कर स्टेक्स बनाये जाते है,

15 से 20 सेमी की लम्बाई में तैयार स्टेक्स

स्टेक्स का नर्सरी बेड में रोपण

नारियल पत्ती से पलवार

नये पत्तियों के साथ अंकुरित स्टेक्स

रोपण हेतु तैयार अंकुरित स्टेक्स

मुख्य खेत में रोपण हेतु जड़ सहित उखाड़े गये स्वस्थ स्टेक्स

लाभ

- 40 वर्ग मीटर नर्सरी एक हेक्टेयर में रोपण हेतु पर्याप्त होती है।
- रोपण हेतु स्वस्थ एवं रोगरहित पौधो का चुनाव
- मुख्य खेत में समरूप फसल होना
- मानसून आने तक कसावा की रोपाई में देरी की जा सकती है।

फसल उत्पादन तकनीकी पत्रक

सितम्बर, 2021

द्वारा प्रकाशित –
डॉ. एम.एन. शीला,
निर्देशक

भाकृअनुप – केंद्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान
श्रीकार्यम, तिरूवनन्तपुरम 695 017, केरल, भारत
ICAR-Central Tuber Crops Research Institute
Indian Council of Agricultural Research
Sreekariyam P.O., Thiruvananthapuram 695017, Kerala

Telephone 0471-2598551 to 2598554; Fax: 0471-2590063
E-mail: director.ctcri@icar.gov.in; Website: http://www.ctcri.org